प्रातःक्लास 27/5/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। यह तो ज़रूर समझते हैं बच्चे बाबा पास हम जाते हैं रिफ्रेश होने लिए। वहां सेन्टर जाते हो। तो ऐसे तो ऐसे नहीं समझ सकते। तुम बच्चों की बुद्धि में है बाबा मधुबन में है। बाप की मुरली चलती ही है बच्चों के लिए। बच्चे समझेंगे हम जाते हैं मधुबन में मुरली सुनने। मुरली अक्षर कृष्ण के लिए समझ लिया है। मुरली का अर्थ कोई और है नहीं। तुम बच्चों को अच्छी तरह से समझ आई है। बाप ने समझाया है और तुम फील करते हो बरोबर हम बहुत बेसमझ बन पड़े थे। ऐसे कोई भी अपन को बेसमझ समझते नहीं हैं। यहां जब आते हैं तब निश्चयबुद्धि होते हैं। बरोबर हम बेसमझ बन गये थे। तुम सतयुग में कितने समझदार थे। विश्व के मालिक थे। कोई मूर्ख थोड़े ही विश्व का मालिक बन सकते हैं। यह ल.ना. मालिक थे ना। इतने समझदार थे तब तो भक्ति मार्ग में भी पूजे जाते हैं। जड़ चित्र कुछ बोल नहीं सकती। शिवबाबा की पूजा करते हैं वह कब बोलते हैं क्या? शिवबाबा एक ही बार आकर बोलते हैं। पूजा करने वालों को भी पता नहीं है कि यह ज्ञान सुनाने वाले हैं। कृष्ण के लिए समझते हैं उसने मुरली बजाई। जिसकी पूजा करते हैं उनकी ऑक्युपेशन को बिल्कुल जानते नहीं। तो पूजा आदि निष्फल ही हो जावेंगे जब तक बाप आये। ऐसे भी नही भक्ति से भगवान मिलता है। नहीं। भक्ति की महिमा नहीं करनी चाहिए। भक्ति से दुर्गति को पाते हैं तब ही भगवान आते हैं सद्गति करने लिए। भक्त लोग ऐसे नहीं समझते हैं। तुम समझते हो भक्ति से दुर्गति होती है तब तो बाप आते हैं। भक्ति है ही दुर्गति। तब ही भगवान आते हैं सद्गति देने। नाम भी है स्वर्ग़ और नर्क। नर्क में ही भक्ति है। जब रावण–राज्य शुरू होता है तब भक्ति होती है। यह बात है बिल्कुल नई। शास्त्रों में यह है नहीं। शास्त्र तो तुमने बहुत पढ़ी। ऐसी बहुत माताएं भी हैं जिन्होंने वेद–शास्त्र आदि पढ़ी हैं। जिन्होंने नहीं पढ़ी हैं वह भी समझते हैं अच्छा हुआ जो हमने नहीं पढ़ी। अभी बच्चे समझते हैं बरोबर सच्चा पढ़ाने वाला एक ही बाप है। बाप को कहा जाता है सत्य। नर से नारायण बनने की कथा सुनाते हैं। अर्थ तो ठीक है। सत्य बाप आते हैं, अभी नर से ना. बनना है तो ज़रूर सतयुग स्थापन करेंगे ना। पुरानी दुनियां कलयुग में थोड़े ही बनेंगे। कथा सुनने समय यह कोई की बुद्धि में नहीं होता है कि हम नर से ना. बनेंगे। अभी तुम समझते हो हम सत्य बाप के पास आये हैं। बाप हमको नर से नारायण बनने का राजयोग सिखलाते हैं। यह भी कोई नई बात नहीं। बाप समझाते हैं फिर कल्प–2 आकर समझाता हूँ। कितनी बड़ी भारी भूल की है। कितने पत्थर बुद्धि बन गये हैं। यह भी नहीं समझते युग–2 बाप आकर कैसे राजयोग सिखावेगा। यह तो हो नहीं सकता। वह तो आवेंगे ही तब जब नई दुनियां की स्थापना होनी होगी। युगे–2 कैसे आवेंगे? इतने बड़े विद्वान, आचार्य, पंडित आदि हैं कुछ भी नहीं समझते हैं। सभी काम चिक्षा पर चढ़ कर काले बन पड़े हैं। तुम समझा सकते हो। ब्रह्मा का चित्र दिखाकर तुम समझा सकते हो। यह रथ है। यह है बहुत जन्मों के अंत का जन्म। पतित। अभी यह भी पावन बन रहा है। यह भी पावन बनते हैं, हम भी बनते हैं। सिवाय योगबल के कोई पावन बन नहीं सकता। विकर्म विनाश हो न सके। पानी में स्नान करने से कोई पावन बन नहीं सकते। यह है योग अग्नि। पानी होता है आग को बुझाने वाला। आग होती है जलाने वाली। तो पानी कोई आग तो नहीं है। जिससे विकर्म विनाश हों। बड़े–2 विद्वान आदि हैं, सबसे जास्ती गुरू तो इसने की है। यह समझते हैं हमने गुरू तो बहुत किये, शास्त्र आदि भी बहुत पढ़े। इस जन्म में जैसे पंडित बना है। यह भी बाप ने समझाया है जो अपन को बच्चे समझते हैं तो इस जन्म में जो कुछ पाप आदि किया है तो वह आकर बतानी चाहिए। जबकि सम्मुख बाप आया है। तो पाप कर्म बता देना चाहिए तो हल्का हो जावेंगे। इस जन्म में हल्के हो जावेंगे। फिर पुरुषार्थ करना है जन्म–जन्मांतर के पाप काटने का। ज़रूर जन्म–जन्मांतर पाप कर्म किये होंगे जिसको(का) बोझा सिर पर है। बाप योग की बात समझाते हैं। योग से ही विकर्म विनाश होंगे। यह बातें तुम अभी सुनते हो। सतयुग में यह बातें कोई सुना न सके। यह सारा ड्रामा बना हुआ है। सेकण्ड सेकण्ड यह सारा ड्रामा फिरता रहता है। एक सेकण्ड न

मिले दूसरे से। सेकण्ड व सेकण्ड आयु कमती हो जाती है। अभी तुम आयु कम होने की ब्रेक देते हो। और योग से आयु बढ़ाते हो। अभी तुम बच्चों को अपनी आयु को बड़ा बनाना है। योगबल से। बाबा योग के लिए बहुत ज़ोर देते रहते हैं; परन्तु कई समझते ही नहीं हैं। कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। तब बाबा कहते हैं योग कोई और बात नहीं। यह है याद की यात्रा। बाप को याद करते–2 पाप कटते जावेंगे। अंत मते सो गति हो जावेगी। इस पर एक मिसाल भी देते हैं। कोई ने किसको कहा तुम तो भैंस हो तो वह समझने लगा मैं भैंस हूँ बोला इस दरवाज़े से निकालो। बोले मैं भैंस हूँ कैसे निकलूँ। सचमुच भैंस बन गये। एक यह मिसाल बैठ बनाया है। बाकी ऐसे कोई है नहीं। यह कोई यर्थात् मिसाल नहीं है। हमेशा रियल बात पर मिसाल बनाया जाता है; परन्तु यर्थाथ् मिसाल है नहीं। इस समय तुमको बाप जो समझाते हैं उनकी फिर त्योहार भक्ति मार्ग में मनाई जाती है। कितने मेले–मलाखाड़े आदि होते हैं। बाकी इस समय जो कुछ होता है उनकी त्योहार बन जाती है। तुम यहां कितने स्वच्छ बैठे हो। मेले–मलाखड़े में कितने मैले हो जाते हैं। मिट्टी बैठ कर ज़ोर से मलते हैं समझते हैं पाप बहुत मिट जावेंगे। बाबा का खुद यह सभी किया हुआ है। नासिक में पानी बहुत गंदा होता था वहां जाकर मिट्टी मलते थे समझते थे पाप नाश हो जावेंगे। फिर उस मिट्टी को साफ करने लिए पानी ले आते थे। ऐसे काम करते थे। अभी तो समझते हैं कितने लम्बे–चौड़े मूर्ख थे। पंडित लोग कितना मूर्ख बनाते थे। कितना गंदा पानी, वहां ढेर के ढेर जाते थे। विलायत में भी बड़े–2 महाराजाएं आदि गंगा का जल मटका भर कर ले जाते थे। फिर स्टीमर में जाता रहता था। आगे एरोप्लेन मोटरें, आदि नहीं थे। बिजली भी नहीं थी। 75 वर्ष में क्या–2 बन गया। सतयुग में भी ऐसे सांइस काम में आते हैं। वहां तो महल आदि बहुत जल्दी बनेंगे। अभी तुम्हारी पारस बुद्धि बनती है। तो वहां यह बनाने करने में देरी नहीं लगती है। जैसे यहां मिट्टी की ईटें बनते हैं वहां सोने के होते हैं। इस पर माया मच्छंदर का खेले भी है। यह तो उन्होंने झूठ–मूठ नाटक बैठ बनाई है दिखाने लिए। बरोबर स्वर्ग में सोने की ईंटें हैं। उनको कहा ही जाता है गोल्डेन एज्ड। इनको कहा जाता है आयरन एज्ड। वहां सतोप्रधान, यहां है तमोप्रधान। स्वर्ग को तो सभी याद करते हैं। चित्र भी उन्हों के कायम हैं। कहते भी हैं आदि सनातन धर्म। फिर हिन्दु धर्म कह देते देवता के बदली हिन्दु कह देते हैं; क्योंकि विकारी हैं तो देवता कैसे कहें। तुम कहां भी जाते हो तो वही समझाते रहो; क्योंकि तुम हो मैसेंजर पैगम्बर। बाप का परिचय हरेक को देना है। कोई झट समझेंगे कि बरोबर तुम ठीक कहते हो। दो बाप हैं। कोई तो कह देंगे परमात्मा तो सर्वव्यापी है। तुम बच्चे समझते हो एक से हद का वर्सा दूसरे से बेहद का वर्सा (ि)मलता है 21 जन्मों के लिए। यह ज्ञान भी तुमको अभी है। वहां यह ज्ञान नहीं रहता। संगम पर ही वर्सा मिलता है जो फिर 21 पीढ़ी जन्म व जन्म तुम राज्य करते हो। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। यह भी अभी मालूम पड़ा है। जो पक्के निश्चय बुद्धि हैं उनको कोई संशय उठाने की बात ही नहीं। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। शिवबाबा आवेंगे तो (ज़)रूर कुछ वर्सा देंगे; इसलिए बाबा कहते हैं यह बैज बहुत अच्छा है। यह ज़रूर पड़ा हो। घर–2 में मैसेज देना है। फिर कोई माने न माने। विनाश आवेगा तो समझेंगे भगवान आया हुआ है। फिर जिन्हों को तुमने बैज दिया होगा वह याद करेंगे यह सफेद पोश वाली फरिश्ते कौन थी। सूक्ष्मवतन में भी तुम फरिश्ते देखते हो ना। तुम जानते हो बाबा–मम्मा योगबल से ऐसे फरिश्ते बनेंगे। हम भी बनेंगे। यह सब बाप इनमें प्रवेश कर डायरैक्ट बैठ डायरैक्शन देते हैं। समझाते हैं। नॉलेज देते हैं। जो बाबा में नॉलेज है वह ज़रूर फरिश्तों में भी होना चाहिए। जब ऊपर में जाते हो तो फिर नॉलेज का पार्ट पूरा हो जाता फिर तो पार्ट मिला है वह सुख का पार्ट बजाते हैं। और वह नॉलेज भूल जाते हैं। तुम तो बच्चे कहां भी जाते हो मैसेंजर की निशानी ज़रूर चाहिए। भल कोई हंसी करे। इस पर क्या हंसी करेंगे। तुम तो यर्थाथ् बात सुनाते हो। यह बेहद का बाप है। उनका नाम है शिव। वह कल्याणकारी है। आकर स्वर्ग की

स्थापन करते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। यह सारा ज्ञान तुम बच्चों को मिला है फिर भूलना क्यों चाहिए। तुम बच्चे यहां आते हो मुरली सुन कर जाते हो फिर तुम सुना क्यों नही सकते हो। सिर्फ़ ब्राह्मणी क्यों सुनाती है। सुन कर और सुना नहीं सकते तो कहेंगे डल हेडेड बुद्धि है। एक ब्राह्मणी चली जाती है तो कहते रहते हैं हमको ब्राह्मणी चाहिए। जैसे कि बुद्धि में कुछ बैठता ही नहीं। सिर्फ़ ब्राह्मणी पर आधार क्यों नहीं। बात तो बहुत सहज है। चलते–फिरते बाप को और वर्से को याद करना है। शान्तिधाम और सुखधाम। सन्यासी ब्रह्म को याद करते हैं। वह तो घर है ना। याद तो करना है बाप को। ब्रह्म रहने का स्थान अलग है। बाप को न जानने कारण वापस कोई जा नहीं सकता। और बाप ने समझाया है आत्मा अविनाशी है। वह कब विनाश नहीं हो सकती। ज्ञान सारा आत्मा में ही है। बाबा भी परम आत्मा है ना। तुम भी परमधाम में रहते हो। जहां बाबा रहते हैं। तो ऐसे नहीं कि सिर्फ़ एक ब्राह्मणी ही सिर्फ़ मुरली चलावे और कोई बोल भी न सके। आप समान बनाकर तैयार करना चाहिए। जो बहुत सेन्टर्स सम्भाल सके तब ही बहुतों का कल्याण कर सकेंगे। एक ब्राह्मणी चली जाती है तो दूसरी क्यों? ...5 वर्ष हुये हैं सेन्टर्स खोले 5 वर्ष में हजामत करते थे क्या। धारणा नहीं की। स्टूडेन्ट पढ़ेंगे नहीं तो कहेंगे यह तो हजाम है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।